

वाटर वर्ल्ड

खगोलविदों की एक टीम ने पाया कि अंतरिक्ष में लाल बौने तारे की परकिरमा करने वाले दो एक्सोप्लैनेट पर ज़्यादातर वाटर वर्ल्ड हो सकता है।

प्रमुख बदि

■ एक्सोप्लैनेट:

- ये एक्सोप्लैनेट **केपलर-138C और केपलर-138D** हैं, जिन्हें [नासा \(NASA\) के हबल](#) एवं सेवानवृत्त [स्पिट्ज़र स्पेस टेलीस्कोप](#) का उपयोग करके देखा गया था।
- यह पहली बार है कि ग्रहों को स्पष्ट तौर पर वाटर वर्ल्ड के रूप में मान्यता दी गई है, ग्रह की एक श्रेणी जिसके होने के बारे में खगोलविदों को लंबे समय से संदेह है।
- **एक्सोप्लैनेट** एक ग्रह प्रणाली में स्थिति है जो **218 प्रकाश वर्ष दूर तारामंडल लायरा में है** और हमारे सौरमंडल के किसी भी ग्रह से अलग है।
- नए ग्रह को एक परकिरमा पूरी करने में 38 दिन लगते हैं।
- ये रहने योग्य क्षेत्र में हैं, जिसका अर्थ है कि ये एक ऐसी कक्षा में स्थिति हैं जहाँ जल तरल अवस्था में मौजूद है तथा यह अपने तारे से सही मात्रा में ऊष्मा प्राप्त करता है।

■ नषिकर्ष:

- केपलर- 138C और D चट्टान (पृथ्वी जैसे चट्टानी ग्रह) की तुलना में हल्के अवयवों से बने हैं लेकिन हाइड्रोजन या हीलियम (**बृहस्पति** जैसे गैस-वशाल ग्रह) से भारी होते हैं।
- यह जल की उपस्थिति का संकेत देता है, जुड़वाँ वशिव के द्रव्यमान का आधा हसिसा जल होना चाहिये।
- उन्होंने गणना की कि दोनों का आयतन पृथ्वी से तीन गुना अधिक है और द्रव्यमान दोगुना ज़्यादा है।
- वे एन्सेलाडस (शनि का चंद्रमा) और यूरोपा (बृहस्पति का चंद्रमा) का बड़े पैमाने पर संस्करण भी हैं।
- इन **जुड़वाँ बहरिग्रहों (एक्सोप्लैनेट) का घनत्व पृथ्वी से कम है लेकिन इसकी तुलना एन्सेलाडस और यूरोपा से की जा सकती है।**
- अब तक की जानकारी के अनुसार, पृथ्वी से थोड़े बड़े इन वाटर वर्ल्ड्स में चट्टानी वशिषताएँ होने की संभावना है।
- समान आकार और द्रव्यमान के ये जुड़वाँ ग्रह पृथ्वी से अधिक वशाल हैं लेकिन यूरेनस और नेपच्यून जैसे आइस जायंट्स से हल्के हैं।
- लेकिन वे हमारे सौरमंडल के ग्रहों से भिन्न हैं और इसका मुख्य कारण पृथ्वी जैसे चट्टानी ग्रहों और बृहस्पति जैसे गैस जायंट्स से बना होना है।

■ महत्त्व:

- यह शोधकर्त्ताओं की इनके प्रति **अज्ञानता को दूर करने तथा भविष्य में और अधिक वाटर वर्ल्ड खोजने में मदद कर सकता है।**

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)